प्रश्न :→ पर्यावरण नियमों का उल्लंघन किये बिना विकास लक्ष्यों का पालन किया जाना चाहिए।

जीवन के प्रत्येक आयाम में वैश्विक स्तर पर परिवर्तन लाने के लिए विकास समय की मांग है। लेकिन हाल के वर्षों में अनेक विकास परियोजनाएं पर्यावरण संरक्षण को नजरअंदाज कर बनाई जा रही हैं-

जैसे :-

→ असम के हाथी रिजर्व क्षेत्रों में कोयला खदान प्रोजेक्ट को मंजूरी प्रदान करना

→ पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण से अत्यंत संवेदनशील पश्चिमी घाट क्षेत्र में बांध निर्माण आदि।

ऐसे सामाजिक आर्थिक विकास का हमारे पर्यावरण, जैवविविधता एवं जनजीवन पर काफी नकारात्मक असर हो सकता है -

→ प्राकृतिक आपदाओं जैसे :- बाढ़, भूस्खलन आदि घटनाओं में वृद्धि हो सकती है

→ जलवायु परिवर्तन एवं वैश्विक ऊष्मन जैसे विश्वव्यापी समस्या अत्यंत गंभीर हो सकती है।

विकास और पर्यावरण में युक्ति संतुलन बना रहे इसके लिए निम्न प्रयास किये जाने चाहिए -

→ सतत विकास पर्यावरण सुरक्षा एवं विकास के मध्य संतुलन स्थापित करने का सर्वोत्तम लक्ष्य है। अतः यूएन द्वारा सुझाए गए सतत विकास लक्ष्यों पर पूर्ण ध्यान आकर्षित करना चाहिए

→ पर्यावरण सुरक्षा से सम्बंधित कानूनों को केन्द्र, राज्य, जिला

एवं ग्राम स्तर पर भी सख्ती से लागू किया जाना चाहिए।

→ पारिस्थिकी रूप से संवेदनशील क्षेत्रों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कस्तूरीरंगन समिति की सिफारिशों पर गौर किया जाय।

→ विकास परियोजनाओं में सोशल ऑडिट के माध्यम से आम-जन की राय को भी शामिल किया जाना चाहिए।

→ पर्यावरण सुरक्षा कानूनों का उल्लंघन करने वाली इकाईयों से सख्ती से निपटा जाय।

सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करने के लिए पर्यावरण सुरक्षा अत्यंत आवश्यक है। इसके महत्व को समझते हुए ही हमारे संविधान के अनु.- 48 एवं 51(क) में भी इसका स्पष्ट उल्लेख किया गया है। इसलिए विकास परियोजनाओं के नाम पर इन सिद्धांतों का उल्लंघन नहीं होना चाहिए।

Q. पर्यावरण नियमों का उल्लंघन किये बिना विकास लक्ष्यों का पालन किया जाना चाहिए। टिप्पणी कीजिए।

Ans:) हमारे संविधान के भाग-IV एवं IV-क में पर्यावरण संरक्षण और संवर्द्धन पर बल दिया गया है, जो मानव तथा राष्ट्र के विकास में पर्यावरण के महत्व को इंगित करता है। पर्यावरण हमारी मूलभूत एवं विलासिता दोनों ही आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। वर्तमान में विकास एवं पर्यावरण में काफी लम्बे समय से द्वंद्व चल रहा है। जलवायु परिवर्तन, पानी की कमी, आर्थिक असमानता, गरीबी एवं भूखमरी आदि समस्याएँ सभी देशों के सामने है। इन सभी समस्याओं का समाधान सतत् आर्थिक विकास द्वारा संभव है। इसके लिए वर्ष 2000 में सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य एवं 2015 में सतत विकास लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं, जिन्हें 2030 तक सभी देशों द्वारा प्राप्त करना है। लेकिन यह सतत् आर्थिक विकास पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना किस प्रकार हो यह यक्ष प्रश्न संपूर्ण वैश्विक जगत् के सामने है। विकास एवं पर्यावरण की एक-दूसरे के बिना कल्पना संभव नहीं है। अतः पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना विकास को अनवरत रूप से जारी रखने हेतु निम्नलिखित कुछ बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक है-

1) संसाधनों का दक्षतापूर्वक उपयोग कर इसके दोहन को नियंत्रित किया जा सकता है।

2) भूमि से संबंधित समस्याओं के कारण GDP में 2.5% की कमी हो जाती है। अतः वृक्षारोपण तथा मृदा संरक्षण कार्यक्रमों द्वारा पर्यावरण को सुधारा जा सकता है।

3) आर्थिक विकास को नापने का नजरिया बदलना चाहिए। सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि के बजाय सतत एवं स्थिर विकास को आर्थिक विकास का पैमाना बनाया जाना चाहिए।

4) ऊर्जा के वैकल्पिक साधनों के उपयोग पर बल दिया जाना आवश्यक है। भारत में मुख्यतः सौर ऊर्जा के क्षेत्र में अपार संभावनाएँ हैं।

5) रियो + 20 के 'हरित अर्थव्यवस्था' की विचारधारा को कार्यरूप में परिणीत करने की आवश्यकता है।

6) एजेंडा-21 के प्रमुख बिन्दुओं - पर्यावरण एवं विकास के मध्य संबंध के मुद्दों का समझना, किसानों को पर्यावरण की जानकारी देना, प्रदूषण फैलाने वालों पर भारी अर्थदंड तथा इस दृष्टिकोण से राष्ट्रीय योजनाएँ बनाना तथा उन्हें लागू करना।

7) पेरिस समझौते के अनुरूप कार्बन उत्सर्जन को मानक स्तर तक लाने हेतु सभी देशों को इस दिशा में सकारात्मक प्रयास आवश्यक है।

निष्कर्षतः विकास को पर्यावरण अनुकूल बनाने के लिए स्टॉकहॉम डेक्लेरेशन-1972, पर्यावरण संरक्षण कानून-1986, ग्रीन इकॉनोमी, तथा एजेंडा-21 जैसे सरकारी प्रयासों के साथ-साथ NGO's तथा व्यक्तिगत स्तर तक इसे अपनाना आवश्यक है ताकि भावी पीढ़ी के प्रति हम अपनी जिम्मेदारियों का सही ढंग से निर्वहन कर सकें।